अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अगस्त-2025

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–तेइसवां	अंक–चौथा	अगस्त–2025

02 एक शब्द
मैं तो कृपाल से बिछुड़ के रोई रे

03 महाराज कृपाल द्वारा एक संदेश

07 बाबा सावन सिंह जी का महाराज कृपाल को एक पत्र
एक पत्र

09 सतसंग
मेरा गुर परमेसर सुखदाई

19 महाराज कृपाल के मुखारविंद से...
गुरु की आज्ञा का पालन

27 गुफा दर्शनों से पहले दिया गया संदेश
गुफा दर्शन

29 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...
लकीर

32 सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी** सहायक: **ज्योति सरदाना**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 281 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

मैं तो कृपाल से बिछुड़ के रोइ रे

मैं तो कृपाल से बिछुड़ के, रोई रे, x 2

1 *पीया से बिछुड़ के, इस जग आई, दर दर भटकी, ठोकर खाई, x 2*
बात ना पूछे कोई रे, मैं तो कृपाल से ....

2 *बिन पीया के मैं, तड़प रही हूँ, दर्शन को मैं, तरस रही हूँ, x 2*
बैरन दुनियां होई रे, मैं तो कृपाल से ....

3 *आऊं-जाऊं, मैं दुःख पाऊं, बिछुड़ पीया से, मैं पछताऊं x 2*
काल देश में खोई रे, मैं तो कृपाल से ....

4 *संग बसे मेरे, मैं क्या जानूं, मैं पगली, पिर ना पहचानूं x 2*
कृपाल से बात ना होई रे, मैं तो कृपाल से ....

5 *कोई ना जाने, देश पराया, तोर दित्ता मुड़, लैण ना आया, x 2*
ना जीवां ना मोई रे, मैं तो कृपाल से ....

6 *भुल्ल गयों वे, तूं बेदर्दा, विछड़ा तैथों, दिल नहीं करदा, x 2*
कृपाल बगैर कित्थे ढोई रे, मैं तो कृपाल से ....

7 *राह भुल्ल गई मैं, किस राह आंवां, आ के लै चल, तरले पांवां, x 2*
मुश्किल डाडी होई रे, मैं तो कृपाल से ....

8 *कृपा करो, कृपाल सुनो रे, दाते दीन, दयाल सुनो रे, x 2*
मैं दुःखयारी रोई रे, मैं तो कृपाल से ....

9 *मैं पापण नूं, गल नाल ला लै, अपने बेड़े, विच बिठा लै, x 2*
'अजायब' कृपाल दी होई रे, मैं तो कृपाल से ....

महाराज कृपाल द्वारा एक संदेश

जो लोग गुरु से विमुख हो गए हैं वे आपको भी गुरु से विमुख कर देंगे, हमें ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

साकत संग न कीजिए दूरो जाईऐ भाग।
वासन कारो परसिए तो कुछ लागे दाग।।

असली चढ़ाई गुरु का हुक्म मानने से शुरु होती है। एक पारसी पैगम्बर ने कहा है, ''अगर गुरु आपसे यह कहता है कि मुसल्ले को शराब में रंग दो जबकि गुरु ऐसा हुक्म नहीं दे सकते फिर भी गुरु का हुक्म मानना चाहिए।'' आप एक बच्चे की तरह बनें। छोटे स्कूल में शिक्षक कहता है कि दो और दो चार तो क्या बच्चा पूछता है कि चार क्यों? कॉलेज पहुँचकर उसे समझ आ जाती है कि दो और दो चार कैसे होते हैं।

रामायण में आता है कि माता–पिता और गुरु के शब्दों पर बिना विचार किए विश्वास करें। गुरु शरीर नहीं है, वह आपको शारीरिक रूप में क्यों बाँधेंगे? विश्वास की नींव जरूरी है और वह उद्देश्य से बनी है। मैं कई बार पाईप का उदाहरण दिया करता हूँ जिसमें कई छेद होते हैं और जिनमें से पानी निकलता है अगर आप सभी छेद बन्द कर देंगे तो स्वाभाविक ही एक छेद से पानी पूरी ताकत से निकलेगा।

हमारे अंदर गुरु के लिए प्यार होना चाहिए। गुरु को हमारे प्यार की जरूरत नहीं क्योंकि वह तो खुद अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। जो परमात्मा की तरफ अपना मुँह करेगा उसे उस प्रेम से ज्यादा फायदा मिलेगा। पहले गुरु की परख करें फिर उन्हें गुरु मानें। अगर गुरु की खोज में सारा जीवन भी बीत जाए तो चिन्ता न करें क्योंकि वह समय आपकी भक्ति में गिना जाएगा।

एक बार लाहौर में महाराज सावन सिंह जी ने नामदान देने के बाद मुझसे कहा, ''मैंने पौधा लगा दिया है अब तुमने इसमें पानी देना है।'' मैंने उनसे कहा, ''आप पाईप में जो पानी भेजेंगे वह मैं आगे दे दूँगा।''

महात्मा की महानता इसमें नहीं कि उसके पास रहने के लिए महल हो या ज्यादा संगत हो। महात्मा सब पर दया करते हैं। महात्मा पापियों को भी माफ कर देते हैं यहाँ तक की जो उनका कत्ल करने के लिए आए महात्मा को उससे भी सहानुभूति होती है।

कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि इंसानी जामें की क्या विशेषता है? सभी ग्रंथ इंसानी जामें की महिमा गाते हैं, यह वह जामा है जिसमें हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। निचले जामें सिर्फ मौज–मस्ती के लिए हैं।

कुछ समय पहले गेहूँ की कमी हो गई तो सरकार ने कहा जो इलाके जरूरतमंद हैं उनकी मदद के लिए आप जरूरतमंद लोगों को अपना एक–एक दिन का राशन दें। किसी ने मुझसे कहा तो मैंने सतसंग के दौरान

लोगों से सप्ताह में एक दिन खाना छोड़ने के लिए कहा। मेरी एक ही अर्ज पर हजारों लोगों ने इस बात को मान लिया। दु:ख और मुसीबतें बाँटने से कम हो जाती हैं। इसी तरह सभी मतभेद चाहे सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक हों ये सब एक साथ जागृत पुरुष की संगत में बैठकर दूर किए जा सकते हैं।

सन् 1962 में एक आदमी ने नाम लेने के नौं साल बाद मुझे पहली बार पत्र लिखा जिसमें उसने शिकायत की और पत्र के आखिर में लिखा, ''मैं आपको छोड़ रहा हूँ।'' मैंने उसे उत्तर में लिखा, ''चाहे तुम जो भी करो लेकिन वह पावर तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगी। गुरु डोर ढ़ीली तो जरूर कर देते हैं लेकिन हाथ से कभी नहीं छोड़ते।''

जब अमेरिका में मुझसे पूछा गया कि क्या आप यहाँ आश्रम बनाना चाहते हैं? मैंने उन लोगों से कहा कि मैं लोगों के शरीर रूपी आश्रमों को जगाने के लिए आया हूँ। किसी नए परिचय की कोई जरूरत नहीं क्योंकि वह चीज उनके अपने अंदर है। बस! मैं उन्हें वह याद दिलाने आया हूँ जो वे भूल गए हैं।

दक्षिणी अमेरिका में यह मेरा आखिरी पड़ाव है। मुझे आपके साथ ये तीन दिन बिताकर और क्रिसमस मनाकर बहुत संतोष मिला। मैं यही कहना चाहूँगा कि हम सबको एक साथ मिलकर काम करना होगा। क्राईस्ट ने कहा है, ''प्यासे के लिए पानी हमेशा होता है।'' यही सच्ची भक्ति है जिसमें कोई रीति-रिवाज नहीं। क्राईस्ट ने और अपने समय में आए सब सन्तों ने सिखाया है कि जो लोग उनके पास आते हैं उन्हें सीधा अनुभव दिया जाता है।

इस टूर पर हजारों लोगों ने गुरु की उपस्थिति से फायदा उठाया। आप गुरु की शारीरिक उपस्थिति का मूल्य कम न समझें। मुझे खुशी है कि जवानों और बूढ़ों ने इस उपस्थिति का फायदा उठाया। हमारे गुरु बाबा

सावन सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''साधु की संगत में बिताया गया एक घंटा सैंकड़ो साल घर में बैठकर किए अभ्यास से ज्यादा फायदेमंद है।''

तकरीबन एक सप्ताह के बाद मैं यहाँ से शारीरिक रूप से चला जाऊँगा लेकिन आध्यात्मिक रूप से नहीं जाऊंगा। इन तीन चार महीनों में हमें गुरु की उपस्थिति का सुनहरी मौका मिला है। आपको हजारों मील दूर से वही प्रकाश मिलेगा, परमात्मा आपके अंदर है। इंसानी जामें का पूरा फायदा उठाएं और गुरु के प्यारे बनें।

लगभग बीस साल पहले मेरे गुरु शारीरिक रूप में थे, उस समय मैं पंजाब के एक शहर में गया। वहाँ हाई स्कूल के कुछ अध्यापकों ने मुझसे कुछ प्रश्न पूछे। मैंने उन्हें उत्तर दिया, वे संतुष्ट हो गए। एक भद्र पुरुष ने कहा, ''आपने जो कुछ कहा है क्या वह सच है?'' मैंने कहा, ''मेरी तरफ देखो, क्या आपको मेरी बात में कुछ झूठ नजर आता है?'' उसने कहा, ''नहीं।'' जब आप विश्वास के साथ बात करते हैं तो शक का कोई प्रश्न ही नहीं रह जाता।

कोई भी सच्चा गुरु ज्यादा भीड़ को अपनी तरफ आकर्षित करने में रूचि नहीं रखता। मेरा उद्देश्य ज्यादा भीड़ इकट्ठी करना नहीं है। गुण महत्त्व रखते हैं चाहे मुट्ठी भर शिष्य हों या एक ही शिष्य हो जो अपने अहंकार की राह को त्याग सके और प्यार से जीना सीखे।

आत्म निरीक्षण के लिए डायरी रखने का उपाय अपने आप का निरीक्षण करने के लिए है। मैंने बहुत ध्यान से विचार करके इसे निर्धारित किया है। मैं अपने शुरूआती जीवन में डायरी रखता था। डायरी रखना इतना जरूरी इसलिए है कि इससे हम अपने अवगुणों को जान सकें। यह डायरी आपको गुरु का शिष्य बनने में मदद करती है। जब आप गुरु के शिष्य बनेंगे तब आप शरीर छोड़कर ऊपर चढ़ाई करेंगे।

***

बाबा सावन सिंह जी महाराज का कृपाल सिंह जी को एक पत्र

एक पत्र

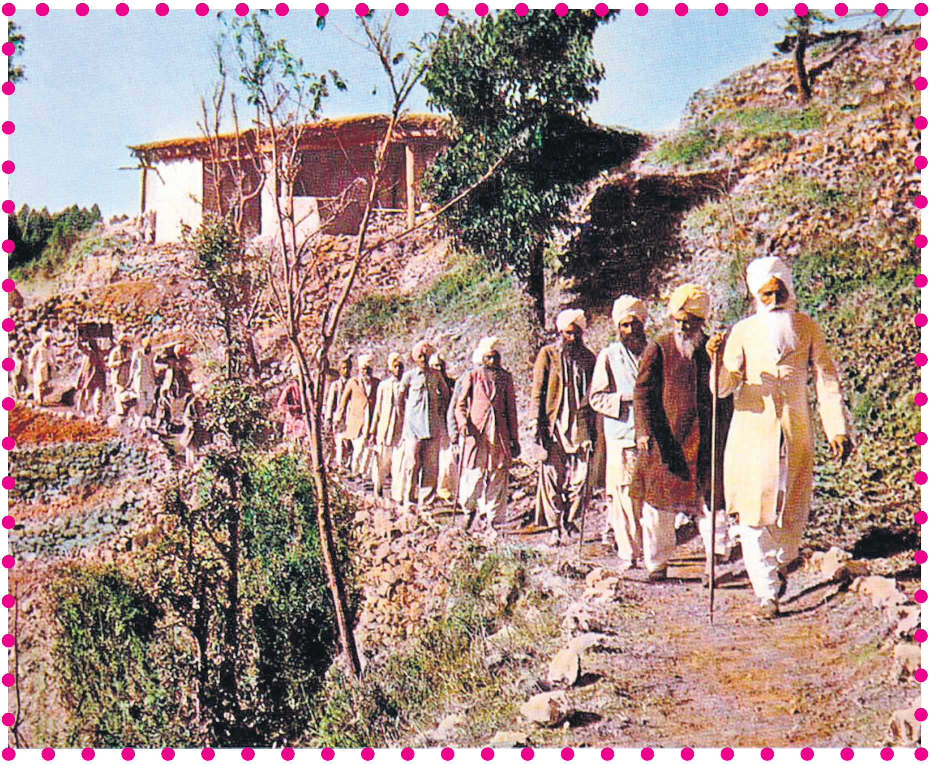

मेरे गुरु बाबा सावन सिंह जी ने 11 जून 1939 को मुझे एक प्यार भरा पत्र लिखा। यह पत्र मेरे जीवन में मार्गदर्शक साबित हुआ।

प्रिय कृपाल सिंह जी,

राधास्वामी

मुझे तुम्हारा प्रेम भरा पत्र मिला, पढ़कर बहुत खुशी हुई। परमात्मा के लिए आपकी आत्मा का प्रेम बना रहे। आपकी आत्मा का परमात्मा हमेशा

आपकी मदद करे। सन्तों को जीवन में असुविधा उत्तराधिकार में मिलती है। हम परमात्मा के हाथ की कठपुतलियाँ हैं, हम लोग परमात्मा की सेवा के लिए संसार में आए हैं।

हमें अपने आपको अभ्यास में व्यस्त रखना चाहिए और भक्ति का कोर्स पूरा करना चाहिए। उसकी रचना की सेवा करना भी बहुत जरूरी है। मैं इंसानियत की सेवा में सुबह से शाम तक लगा रहता हूँ। कई बार मुझे अभ्यास के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। हुजूर बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''सेवा अभ्यास से कम नहीं है।'' हमें सतसंग में अपनी सेवा के बदले कोई आशा नहीं रखनी चाहिए।

सतसंग में हर तरह के लोग आते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जिनका हृदय प्रेम से भरा होता है, वे तन–मन और धन सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं जो बातें करने और निन्दा में ही व्यस्त रहते हैं लेकिन सभी से प्रेम करना हमारा कर्त्तव्य है। अगर वे अपनी बुरी आदतें नहीं छोड़ते तो हम भलाई के तरीके को क्यों छोड़ें।

मेरी आपको सलाह है कि आप सतसंग के साथ–साथ अपना कर्त्तव्य ईमानदारी से निभाएं और अपने भजन–सिमरन का कोर्स भी पूरा करें। मैं आपसे बहुत खुश हूँ। आप तन–मन और धन से परमात्मा की सेवा कर रहे हैं। बीबी कृष्णा को मेरा राधास्वामी और बच्चों को प्यार।

आपका,

सावन सिंह

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मेरा गुर परमेसर सुखदाई

DVD-583(3)

30 जुलाई 1996 गुरु अर्जुनदेव जी की बानी इटली

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया और अपना यश करने का मौका दिया है। सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे हर युग में हर समाज में परमात्मा के हुक्म के मुताबिक आते हैं। सन्त–महात्मा न तो पहले की बनी हुई समाज तोड़ते हैं और न ही कोई नई समाज बनाते हैं। सभी सन्तों का एक ही तर्जुबा होता है और एक ही संदेश होता है कि हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। यह परमात्मा से बिछुड़कर मन और माया के जाल में फँस गई है, अपने घर को और अपने परमात्मा को भूल गई है।

महात्मा हमारे हाथों में डंडे या तलवारे देने के लिए नहीं आते और वे न हमें लड़ना ही सिखाने के लिए आते हैं। महात्मा तो हमें यह बताते हैं कि हमें जिस परमात्मा की खोज है वह एक है। चाहे कोई अमेरिका, यूरोप या हिन्दुस्तान का रहने वाला है, औरत या मर्द है सबका परमात्मा एक है। उससे मिलने का तरीका या साधन भी एक ही है। महात्मा अपने तर्जुबे के मुताबिक हमें यह भी बताते हैं कि परमात्मा जिसे भी मिला अंदर से ही मिला है और जिसे भी मिलेगा अंदर से ही मिलेगा।

सन्त–महात्मा जब तक संसार में रहते हैं, उनकी तालीम का सही अर्थों में प्रचार होता है। उन्होंने हमारे ऊपर रहम खाकर अच्छी लेखनियाँ लिखी होती हैं कि आने वाले लोग इनसे फायदा उठाएं। हम उनके जाती तर्जुबे को तो भूल जाते हैं, उनकी लेखनियों को मजहब और कौमों की शक्ल दे देते हैं। ऐसा हम अपने पेट की खातिर और मान बड़ाई की खातिर करते हैं, लोगों से लड़ना–भिड़ना शुरु कर देते हैं।

महात्मा सारे संसार के लिए आते हैं, सन्त–महात्मा किसी समाज के कैदी नहीं होते। वे सारे संसार को अपना घर समझते हैं, सब समाजों को अपनी समझते हैं। सन्तों की नजर बाहर किसी रीति–रिवाज पर नहीं होती, उनकी नजर आत्मा पर होती है।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि हमें आत्मा का ज्ञान तब होता है जब हम फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर 'शब्द' के साथ जुड़ जाते हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं, वहाँ पहुँचकर पता चलता है कि आत्मा एक है। वहाँ न औरत का झगड़ा है न मर्द का झगड़ा है, लिंग भेद उससे नीचे होता है। वहां कोई यह नहीं कह सकता कि आत्मा अमेरिकन है या हिन्दुस्तानी है। आत्मा उसी तत्व की बनी है जिसका परमात्मा बना है, वहाँ जाकर आत्मा के दिल के अंदर सच्ची जाग पैदा होती है कि मेरा भी कोई परमात्मा है।

प्यारेयो, यह बातों का मजबून नहीं और न ही पढ़–पढ़ाई का मजबून है। कहीं हमारे दिल में यह ख्याल हो कि शायद हम पढ़कर लेक्चरर बनकर समझ सकेंगे कि आत्मा एक है, यह आत्मा परमात्मा की अंश है, यह कमाई की चीज है। कबीर साहब कहते हैं:

दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा।।
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा।।

सन्त–महात्मा अपनी मर्जी से इस संसार में नहीं आते, वे परमात्मा के हुक्म से संसार में आते हैं। जिन आत्माओं को परमात्मा के साथ जोड़ने का हुक्म होता है, वे उस हुक्म के मुताबिक उन आत्माओं को परमात्मा के साथ जोड़ते हैं।

अगर हमने दुनिया का कोई भी हुनर सीखना है तो हमें उसी किस्म का उस्ताद धारण करने की जरूरत पड़ती है। लोहे का काम सीखना है तो लुहार से ट्रेनिंग लेनी पड़ती है इसी तरह अगर हमें डॉक्टर बनना है

तो डाक्टर की सोहबत करनी पड़ती है। हमने दुनिया का कोई भी हुनर सीखना हो तो कई साल उस्तादों की सोहबत करनी पड़ती है। उसके बाद उनके कहने के मुताबिक हमें मेहनत भी करनी पड़ती है। ऐसा नहीं कि हम स्कूल तो चले गए लेकिन टीचर का कहना नहीं माना फिर हम बी.ए., एम.ए की डिग्री कैसे हासिल कर सकते हैं?

इसी तरह जब परमात्मा जीवों को तारना चाहते हैं तो अपनी शक्ति किसी इंसान में रख देते हैं। वह देखने में इंसान की शक्ल जरूर रखते हैं लेकिन अंदर इंसान में और उनमें बहुत फर्क होता है। महात्मा दुनिया में आकर छोटा सा जीवन व्यतीत करते हैं, उनकी सबसे बड़ी निशानी यह है कि वे अपनी रोजी–रोटी खुद कमाकर खाते हैं। वे दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैलों में गंदे नहीं होते, उन्हें गुरु से जो हिदायतें मिली होती हैं, उन्होंने अपने आपको उसमें पूरी तरह ढाला होता है। आपके आगे अर्जुनदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनने वाला हैः

दरसन भेटत पाप सभ नासेंह हर स्यों देय मिलाई।।
मेरा गुर परमेसर सुखदाई।। मेरा गुर परमेसर सुखदाई।।

मैंने सुबह अभ्यास में बैठने से पहले कहा था कि हम बाहर बदन की मैल को पानी से साफ कर लेते हैं अगर जिस्म को गहरी मैल लग जाए तो वह साबुन से साफ हो जाती है लेकिन आत्मा को लगी पापों की मैल न पानी से उतरती है, न जप–तप से और न पूजा–पाठ से उतरती है। यह मैल न जंगलों–पहाड़ों में जाने से उतरती है और न किसी खास किस्म के रीति–रिवाज करने से उतरती है।

प्यारेयो, जिन जप–तप, पूजा–पाठ और तीर्थों की लंबी यात्राओं का धर्मग्रंथों में जिक्र आता है, ये सब मैंने अपनी जिंदगी में खुद किए हैं। मेरे दिल में बचपन से ही खोज थी, मैं सिक्खों के घर पैदा हुआ था। बचपन से ही माता–पिता ने गुरु ग्रंथ साहब पढ़ा दिया था।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि गुरु ग्रंथ साहब रूहानियत का खजाना है। गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब और बहुत से महात्मा जो परमगति को प्राप्त थे, उनकी बानी गुरु ग्रंथ साहब में दर्ज है। सबका एक ही संदेश है कि कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए, वह अंदर जाने का रास्ता बता दे और हम उनकी शिक्षा के मुताबिक अपने जीवन को ढाल लें तभी हम उन पापों की मैल को उतार सकते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि पापों की मैल को उतारने का एक ही तरीका है कि कोई पूर्ण महात्मा मिल जाए, हम श्रद्धा-प्यार से उनके दर्शन करें और उनकी शिक्षा पर अमल करें फिर ही हमारे पाप उतर सकते हैं। गुरु हमें नाम के रास्ते पर डालते हैं, जब हम नाम के रास्ते पर चलकर कमाई करने लग जाते हैं फिर हमारे पापों की मैल उतरती है। सच तो यह है कि पूर्ण महात्मा का दर्शन ही हमारे करोड़ों किस्म के पापों को नाश करता है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे।।

सच तो यह है कि अगर कोई सुनकर भी प्रतीत ले आता है सन्तों के दर्शन कर लेता है तो उसकी संभाल होती है। आपने मैगजीन में महाराज कृपाल की कहानी पढ़ी है कि हरनाम सिंह ने महाराज कृपाल के अबोहर जाते हुए कार में दर्शन किए थे। उसने अंत समय में अगुवाही भरी कि मुझे महाराज जी लेने के लिए आए है। प्यारेयो, जिस तरह हरनाम सिंह ने श्रद्धा बनाई थी, वह शराब पीता था और भी कई प्रकार के नशे करता था। आप देख लें कि कार कितनी तेज जाती है, महाराज कृपाल के दर्शन करने से ही वह शराब पीने और हर प्रकार के नशे छोड़कर अच्छा इंसान बना। एक साल बाद महाराज कृपाल ने उसे दर्शन दिए और उसे लेकर गए।

पारब्रहम का नाम दृढ़ाए अंते होय सखाई।।

हम आमतौर पर दुनिया के पदार्थों में सुख ढूंढते हैं। हम सोचते हैं कि शायद हुकूमत में सुख है, हमारे दिल में नेता बनने का चाव पैदा हो जाता है, हम बहुत जोश–खरोश के साथ नेता बनने की कोशिश करते हैं और बन भी जाते हैं। जब लोग हमारा जुलूस निकालते हैं और अखबारों में वाह–वाह करते हैं तब मन फूला नहीं समाता, जब थोड़े समय के बाद वही लोग राज पलटा कर देते हैं, गोली का निशाना बना देते हैं, फाँसी के फंदे पर चढ़ा देते हैं या अखबारों में बेइज्जती करते हैं फिर पता चलता है कि हम जिस हुकूमत को सुखों की सेज समझते थे किस तरह वह दुख बन गई और हमें छोड़नी पड़ी।

तजुर्बा बताता है कि दुनिया के किसी भी पदार्थ में सुख नहीं अगर है तो अस्थाई है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि सारे सुख सारी शान्ति नाम में है। नाम गुरु से मिलता है इसलिए आप कहते हैं कि मेरे गुरु और परमेश्वर में कोई फर्क नहीं, उन्होंने आकर मुझे भक्ति का दान दिया, मैंने भक्ति की और अंत समय में गुरु ने आकर मेरी मदद की।

सगल दूख का डेरा भंना संत धूर मुख लाई।।
पतित पुनीत कीए खिन भीतर अग्यान अंधेर वंञाई।।

मेरे गुरु ने मेरे ऊपर बहुत कृपा कर नाम का भेद दिया। जब मैं नाम के साधन से पारब्रहम में पहुँच गया तो आत्मा को शान्ति आ गई। मुझे जन्म–मरण का जो कष्ट था वह भी गुरु ने समाप्त कर दिया है।

करण कारण समरथ सुआमी नानक तिस सरणाई।।

परमात्मा कण–कण में व्यापक है। वह सब कुछ करने योग्य है, समर्थ है, वह जो चाहे सो करता है। मैं उस परमात्मा की शरण में आ गया हूँ। अब हमारी यह हालत है कोई अच्छा काम हो जाता है, घर में खुशी हो जाती है तो हम फूले नहीं समाते। हम कहते हैं शायद हम बहुत समझदार

हैं, हमने ऐसा किया तभी हमें यह सुख मिला लेकिन जब हमारी आँखें खुल जाती हैं और परमात्मा से मिल लेते हैं फिर पता चलता है कि जो कुछ कर रहा है वह परमात्मा ही कर रहा है। जब कोई दुख या कष्ट आ जाता है तो हम परमात्मा में अनेकों ही नुख्स निकालते हैं।

हम जिस महात्मा की बानी पढ़ रहे हैं, उस समय के समाजिक लोगों ने इन्हें गर्म तवे पर बिठाया, अमानवीय कष्ट दिए। आपका एक सेवक मियाँ मीर मुसलमान जाति का अच्छी कमाई वाला था। जब उसे पता चला कि ये लोग परमात्मा के नाम पर एक साधु को इतने कष्ट दे रहे हैं तो उसने आपके पास जाकर कहा, ''आप मुझे हुक्म दें, मैं लाहौर की ईंट से ईंट बजा सकता हूँ।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज जो परमात्मा से मिल चुके थे, उन्होंने कहा, ''देख भई मियाँ मीर, यह तो मैं भी कर सकता हूँ लेकिन प्यारा पुत्र वही है जो पिता का कहना माने।''

तेरा कीआ मीठा लागै, हरि नामु पदारथु नानकु मांगै।।

परमात्मा जो कुछ कर रहा है वह मीठा लगता है, गुरमुख वही है जो उसका भाणा माने। सरमद की हिस्ट्री में आता है कि जब उन्हें कत्ल करने लगे तो जल्लाद उनके सिर पर टोपी पहनाने लगे क्योंकि जिसे फांसी देनी होती है, उसके सिर पर काली टोपी पहनाते हैं। सरमद ने कहा, ''देख भई सज्जना, तू जिस भी रूप में आता है, मैं तुझे पहचानता हूँ, तू आ तेरा स्वागत है।'' उन्हें जल्लाद में भी खुदा परमात्मा दिखाई दे रहा था। अब आप देख लें कि जिस बादशाह औरंगजेब के हुक्म से सरमद को कत्ल किया गया था, उसे आज कोई याद नहीं करता लेकिन वहाँ सरमद का मकबरा बना हुआ है और लोग बड़े प्यार से उस जगह पर सजदा करते हैं।

बंधन तोड़ चरन कमल दृढ़ाए एक शबद लिव लाई।।

सबसे पहले पूर्ण सतगुरु सतसंग के जरिए हमारे समाजिक बंधनों को तोड़ते हैं फिर नाम देकर तन के बंधन को तोड़ते हैं। मन का बंधन हमें

बाहर ही रखता है अंदर जाने नहीं देता। जब हम तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाते हैं तब तन का बंधन समाप्त हो जाता है। मन ब्रह्म का अंश है, यह त्रिकुटी का रहने वाला है। जब हम मन को इसके घर पहुँचा देते हैं या हम ब्रह्म में पहुँच जाते हैं तो मन का बंधन टूट जाता है।

अंध कूप बिखया ते काढयो साच शबद बण आई।।

हम विषय–विकारों के अंधे कूंए में गिरे हुए हैं। सतगुरु शब्द के साथ जोड़ते हैं, ब्रह्म या त्रिकुटी तक दुनिया के सूक्ष्म से सूक्ष्म भोग हमारा पीछा नहीं छोड़ते। हम जब तक बाहर हैं, स्थूल भोग हैं। हम इन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। अंदर जाते हैं तो सूक्ष्म भोग हैं, कारण देश में जाते हैं तो कारण भोग हैं इसलिए सन्तों ने संगत में बहुत से कानून बनाए होते हैं। हर एक सन्त ने कहा है कि शादी एक बार होती है, जिसके साथ शादी है हमें उसी की तरफ आकर्षित होने के लिए कहा है लेकिन जो यहाँ कायम नहीं, जब वह इस स्थूल दुनिया को छोड़कर नूरी दुनिया में जाते हैं तो वहाँ कैसे कायम रह सकते हैं।

दुर्वासा ऋषि की पहुँच स्वर्गों तक थी। कृष्ण भगवान उसका आदर करते थे, जब वह स्वर्गों में गया तो उर्वशी परी ने उसे ठग लिया। उसका जप–तप वहीं खत्म हो गया। आप कबीर साहब का शब्द पढ़कर देखेंः

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।

यह जैसे–जैसे चढ़ाई करता है, रिद्धियां–सिद्धियां और डराने वाली ताकतें भी आ जाती हैं, लोभ देने वाली ताकतें भी अंदर आती हैं।

जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ कतहु न धाई।।

जब आत्मा पारब्रह्म में पहुँच जाती है, साधगति को प्राप्त हो जाती है तो जन्म–मरण का संशय खत्म हो जाता है कि पता नहीं किस दुनिया में जाएंगे, आगे क्या होगा कैसा बर्ताव होगा? वह संशय खत्म हो जाता

है। आँखों से देख लिया कि गुरु की दया से मुझे कौन सी जगह मिली है। आम समाज वाले लोग यही भरोसा दिलाते हैं कि मरने के बाद आपको स्वर्ग मिलेगा, हूरें मिलेगी लेकिन सन्तमत में इन बातों का कोई मूल्य नहीं होता। सन्त यह कहते हैंः

जो कुछ करना सो अभी करना अग्गे दा न भरोसा धरना।

कबीर साहब कहते हैंः

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु, मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु।।

परमात्मा कृपाल के आखिरी दिनों में उनके एक खास प्यारे ने कहा कि आप बाबा सावन सिंह जी के आगे विनती करें कि आपको छोड़ जाएं महाराज कृपाल ने हँसकर कहा, ''अगर आपका कोई सज्जन आपको कोई तोहफा भेजे तो क्या आपको खुशी नहीं होगी, क्या आप उस तोहफे को परवान नहीं करेंगे?''

नाम रसायण एह मन राता अमृत पी तृपताई।।

आप प्यार से कहते हैं कि मेरा जन्म–मरण गुरु की कृपा से कट गया। गुरु ने वह नाम, वह अमृत पीने के लिए दिया जिसे पीकर मेरी आत्मा उस अविनाशी परमात्मा का रूप हो गई है, उसमें मिल गई है। इस अमृत का जिक्र हर महात्मा ने अपनी–अपनी बोली में किया है। किसी महात्मा ने इसे जिंदगी का पानी, किसी ने इसे जिंदगी की रोटी और किसी महात्मा ने इसे अमृत कह दिया। कुरान में इसे आबे हयात कहकर बयान किया गया है।

संत संग मिल कीरतन गाया निहचल वसया जाई।।

मुझे यह सन्तों की कृपा से मिला। सन्तों ने सतसंग किया, यह सन्तों की संगत का फल है। कबीर साहब कहते हैंः

कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ।।
पेखत ही पुँनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ।।

पूरै गुर पूरी मत दीनी हर बिन आन न भाई।।

सन्तों की बानी में जगह–जगह पूरे गुरु और अधूरे गुरु का जिक्र आता है। अधूरा गुरु उसे कहते हैं जिसने कोई कमाई तो नहीं की होती, चार किताबें पढ़ ली, इधर–उधर से कथा–कहानियां याद कर ली और लोगों को बाहर–बाहर ही रिझा रहा है।

पूर्ण गुरु विषय–विकारों का पानी नहीं पीते, वह अंदर जाकर नाम का अमृत पीते हैं। पूर्ण गुरु बाहर दुनिया के साथ नहीं जुड़े होते वह अंदर अपने गुरुदेव परमात्मा के साथ जुड़े होते हैं। पूर्ण गुरु दुनिया की जायदाद के साथ नहीं जुड़े होते बल्कि जब वह अंदर चले जाते हैं तो दुनिया की बादशाही को आँखों के आगे नहीं लाते कि यह भी एक दिन छिन जानी है। पूर्ण गुरु जिंदगी में नाम की कमाई करके नाम रूप हुए होते हैं। पूर्ण गुरु किसी की निन्दा नहीं करते और न ही किसी के साथ द्वैष भाव रखते हैं। पूर्ण गुरु को सबके अंदर अपना प्यारा गुरु ही नजर आता है। आप प्यार से कहते हैं कि जब ऐसे पूर्ण गुरु मिल जाते हैं तो वह हमें सच्चखंड तक पहुँचने का पूरा रास्ता बताते हैं, सिर्फ रास्ता ही नहीं बताते बल्कि साथ होकर हमारी मदद भी करते हैं।

नाम निधान पाया वडभागी नानक नरक न जाई।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि भाग्यशाली ही ऐसे पूर्ण गुरु से नाम की दात प्राप्त कर सकते हैं। वे जिन्हें नाम देते हैं उन्हें सच्चखंड जाने का पासपोर्ट मिल जाता है, वे नरक में नहीं जा सकते।

हमें चाहिए कि हम नाम की कमाई करें, सन्तों की शिक्षा पर अमल करें। जिंदगी थोड़ी है, मौत का शिकंजा कसा जा रहा है अगर दिन रहते–रहते काम कर लें तो अच्छा है। ऐसे पूर्ण महात्मा हमारे मुफ्त के नौकर होते हैं, वे किसी भी सेवक की मदद करके उसके ऊपर एहसान नहीं करते, न ही वे किसी से इसकी फीस ही माँगते हैं। ***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...

गुरु की आज्ञा का पालन

अगर आप गुरु की आज्ञा का पालन करेंगे तो गुरु आपको आपके अपने घर का मालिक बना देगें। जो बच्चा अपने पिता की छोटी से छोटी ख्वाहिश को भी मानता है, वह पिता की खुशी प्राप्त कर लेता है। जो अपने विचारों पर जोर देता है, आज्ञा का पालन नहीं करना चाहता, बेशक उसे भी गुरु का प्यार मिलेगा लेकिन उसे अंतरी कुंजी नहीं सौंपी जाएगी।

अपना मन बना लें कि आप अपने मन का कहना मानना चाहते हैं या **गुरु की आज्ञा का पालन** करना चाहते हैं, चुनाव आपके अपने हाथ में है। आप चुनाव करने के लिए स्वतंत्र हैं कोई और आपके लिए चुनाव नहीं कर सकता। जिन्होंने गुरु का रास्ता चुन लिया है, उन्हें यह संसार बुरा कह सकता है लेकिन आपको फिक्र करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि आपने सही रास्ता अपनाया है।

हमें उन सभी गुणों को अपनाना चाहिए जो परमात्मा के साथ जुड़ने में हमारी मदद करते हैं। परमात्मा को पाना मुश्किल नहीं, इंसान का बनना मुश्किल है। सैंकड़ो बार हम अपना सिर नीचा करके कहते हैं, ''हाँ मैं करूंगा।'' लेकिन हम वही करते हैं जो हम चाहते हैं। इससे जाहिर होता है कि हमने अभी तक अपनी आदतें नहीं बदली हैं इसलिए एकदम से अपनी आदतों को बदल दें, अभी से शुरुआत करें।

गुरु सभी घटनाक्रम को एक अलग आँख से देखते हैं जबकि हर व्यक्ति अपने स्तर से देखता है। अगर आपने किसी को अपने से बड़ा स्वीकार किया है तो उनकी **आज्ञा का पालन** करें। याद रखें केवल गुरु को निहारने से आपको मुक्ति नहीं मिलेगी। गुरु जो कुछ कहते हैं वह करें, **गुरु की आज्ञा का पालन** करें और उनके प्रति ग्रहणशील बनें क्योंकि

आत्मा ग्रहणशीलता से ताकत प्राप्त करती है। जो काम अभी असंभव प्रतीत हो रहा है वह बहुत आसान हो जाएगा। सच्चे गुरु की संगत में सभी पाप भस्म हो जाते हैं, सच्चे गुरु से आपको नाम की कीमती दात मिलती है। सतगुरु इतने ताकतवर हैं कि न सिर्फ उनके शिष्यों को फायदा मिलता है बल्कि जो उन शिष्यों को प्यार करता है, उसे भी गुरु की संभाल मिलती है।

जो केवल गुरु के शरीर का आदर करते हैं, उनके लिए उम्मीद कम है लेकिन जो **गुरु की आज्ञा का पालन** करते हैं, उनकी मुक्ति अवश्य होगी। गुरु हमें जो कहते हैं, हमें उसका आदर करना चाहिए फिर हमारा अपने पिता के घर वापिस जाना निश्चित है। जो लोग केवल बाहरी तौर से गुरु का आदर करते हैं लेकिन गुरु के कहने पर अमल नहीं करते, उनके लिए अभी भी वक्त है।

गुरु की शिक्षाओं पर अमल करना ठीक इस तरह है जैसे उस्तरे की धार पर चलना। आप जितना ज्यादा उस्तरे की धार पर चलेंगे, उस्तरा उतना ही ज्यादा आपके पैर को काटेगा। इसका मतलब हैं कि आप जितना ज्यादा गुरु की शिक्षाओं पर अमल करेंगे, गुरु के कहने पर चलेंगे तो आपको अपना नाम और मान छोड़ना पड़ेगा कि आप कौन हैं। आपको केवल गुरु की परवाह करनी पड़ेगी।

गुरु भक्ति के मार्ग में सबसे कठिन है कि गुरु जो कहते हैं आप उस पर अमल करें, चाहे संसार आपकी तारीफ करे या न करे। हो सकता है कि गुरु कुछ ऐसा कह दें जो आपकी बुद्धि को अच्छा न लगे लेकिन आपका क्या फर्ज है? जब लड़ाई के मैदान में अफसर आक्रमण करने का हुक्म देता है तो सिपाही को आक्रमण करना चाहिए। गुरु ऐसा कभी कुछ नहीं कहेंगे जिसका कोई मतलब न हो। हो सकता है कि उस वक्त आपको समझ न आए लेकिन उसके पीछे आपकी बेहतरी के लिए कोई अच्छा मकसद है इसलिए गुरु के हुक्मों को मानना बहुत कठिन है।

ABC कहाँ से शुरु होती है? जब आप गुरु के हुक्म को मानते हैं तो गुरु कहते हैं कि अपने जीवन को पवित्र रखें, कुछ समय के लिए बाहर से ध्यान छोड़कर अंतर्मुखी हो जाएं, शरीर की चेतनता से ऊपर उठें। परमात्मा की जो ताकत आपके अंदर ज्योति और नाद के रूप में है, उसके संपर्क में आएं फिर सूक्ष्म और कारण शरीरों से ऊपर उठें। आपको पता चलेगा कि 'मैं और मेरा पिता एक हैं' का क्या मतलब है। आप उससे आगे महा चेतनता की अवस्था में पहुँच जाएंगे, यह आखिरी लक्ष्य है।

भाईयो, मेरी हिदायतें मानें, आप भजन करें, चाहे थोड़ा सा ही, जो तजुर्बा आपको मिला है उसे बढ़ाएं। अपने दैनिक जीवन के हर कर्म को देखें और डायरी रखें। भजन-सिमरन करना न छोड़ें। हर गलती का इलाज है लेकिन आज्ञा न मानने का कोई इलाज नहीं है और उन लोगों के लिए रास्ता लम्बा है। जिन्हें नाम मिला है वे अवश्य परमात्मा के पास पहुँचेंगे लेकिन जो लोग हिदायतें नहीं मानेंगे, उनकी यह यात्रा बहुत लम्बी होगी। आपको ही करना है चाहे एक जन्म, दो जन्म या चार जन्म में करें तो फिर अब क्यों नहीं? याद रखें जिस शिष्य का मुख हमेशा गुरु की ओर होता है, वह गुरु का ध्यान आकर्षित करता है। अगर आप किसी को अपने दिल में रखते हैं तो आप उसके दिल में बसेंगे।

सारी सृष्टि परमात्मा के नियंत्रण में हैं, जैसे पावर हाउस हर मशीनरी को नियंत्रण में रखता है। आपको पावर हाउस का इंचार्ज बताएगा कि मशीनरी का एक पुर्जा भी उसके हुक्म के बगैर हिल नहीं सकता। जो उसके नीचे काम करते हैं वे कहते हैं, ''ध्यान रहे उसकी आज्ञा का पालन किया जाए नहीं तो मशीनरी से हाथ-पैर कट सकता है।'' उसकी इच्छा एक हुक्म की तरह है, उसे कोई नहीं मिटा सकता।

परमात्मा को शब्द, नाम या word कहा जाता है जिसे हम नियंत्रण करने वाली शक्ति कहते हैं। आप उसे परमात्मा की इच्छा, हुक्म या मौज

कह सकते हैं। शब्द व सतनाम के प्यार द्वारा सारी खुशियाँ प्राप्त की जाती हैं। आत्मा परमात्मा का हिस्सा है और ऐसे ही वह शब्द का हिस्सा है। जब आत्मा परमात्मा से मिलकर एक हो जाती है, वह परम आनंद से भरपूर हो जाती है। उस शक्ति की शरण में जाएं जो सदा से ही गूँज रही है।

जो सुख को चाहे सदा, शरण राम की ले।

हम जब तक गुरु को अपना सब कुछ समर्पित नहीं करेंगे तब तक आना–जाना लगा रहेगा। गुरु आपकी बुद्धि के मालिक हैं, गुरु की इच्छा के अनुसार जीवन जीना चाहिए।

मौलाना रूमी साहब परमात्मा से प्रार्थना करते हैं, ''यह बुद्धि मेरा मुख आपसे दूर कर देगी, आप मेरी बुद्धि पर अपना नियंत्रण रखेंगे तो मैं बच जाऊँगा।'' दूध फटने में ज्यादा समय नहीं लगता अगर आपका मन सौ प्रतिशत गुरु की बात को मानता है तो आपको पता चलेगा कि परमात्मा कौन है। अपनी बुद्धि को जरा सा भी उसमें दखल न देने दें। जो बिना किसी सवाल के गुरु को मानने के इच्छुक हैं, उन्हें खजाना मिलेगा। नाम का सदा रहने वाला गीत परमात्मा का कीमती हीरा साधु के पास है। आप यह भी कह सकते हैं कि परमात्मा ने अपना खजाना गुरु के हवाले किया हुआ है। जो लोग गुरु के वचनों को सच मानते हैं, गुरु उनके आगे वह खजाना रख देते हैं, ऐसे गुरु बड़े भाग्य से मिलते हैं।

अगर किसी को सच्चा गुरु मिल गया है और वह पूरी तरह से गुरु की आज्ञा का पालन करता है तो वह निश्चित तौर पर अहंकार के बहुमुखी सर्प को तबाह करके एक दिन अपने दिव्य घर पहुँच जाएगा। प्यार के उस रास्ते में ऐसे क्षण भी आएंगे जब शिष्य सीमित समझ से गुरु को परखते हुए गुरु की आज्ञा पर शक करेंगे लेकिन ऐसे क्षण हमें और अधिक पूर्ण और सुरक्षित बनाने के इम्तिहान होते हैं। जो इन इम्तिहानों को कामयाबी से पास कर लेगा वह एक दिन परमात्मा की शान में चमक जाएगा।

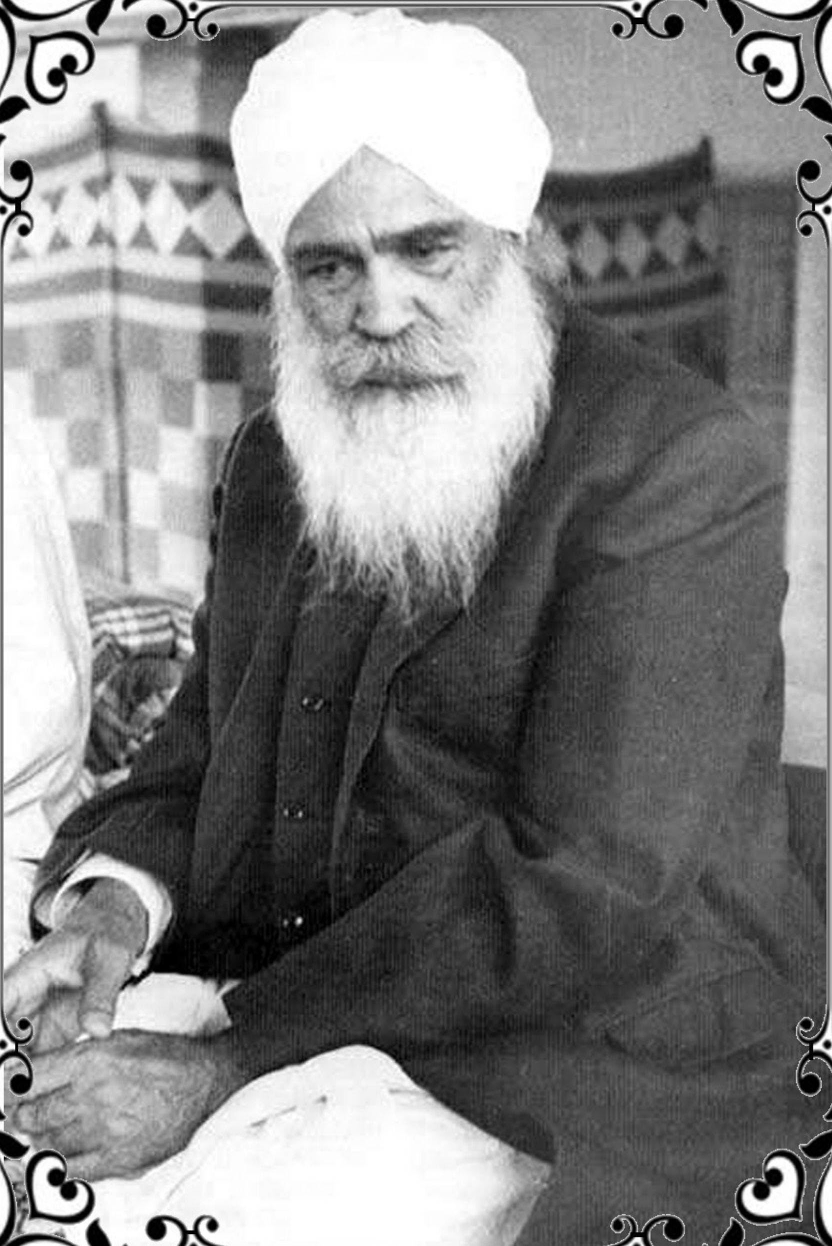

आज्ञा का पालन करना और अपने आपको समर्पित कर देना दोनों अलग–अलग हैं। गुरु की आज्ञा का पालन करने का यह मतलब नहीं कि आपने अपने आपको समर्पित कर दिया है हालाँकि जिसने समर्पण

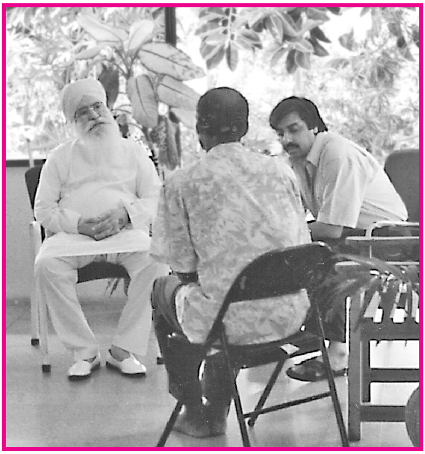

कर दिया है वह आज्ञाकारी है। अगर आपने समर्पण कर दिया तो आप क्यों या क्या नहीं सोचेंगे, आप वही करेंगे जो गुरु कहते हैं कि मैंने अपने आप को आपके हवाले कर दिया है अब आपकी जो मौज है आप वह करें।

जब हजरत इब्राहिम के गुलाम से पूछा गया कि वह कहाँ सोना चाहेगा, कौन से कपड़े पहनना चाहेगा? गुलाम ने उत्तर दिया, ''हुजूर, आपने मुझे खरीदा है आप जो चाहेंगे मैं वह करूंगा।'' समर्पण का मतलब यह है, यह कदम उठाना बहुत मुश्किल है क्योंकि मन में सैंकड़ों शक होते हैं।

अगर आपको कभी पता चल जाए कि गुरु क्या हैं फिर सीखने को कुछ नहीं बचता। गुरु सबको प्यार से सिखाते हैं, सब उनके बच्चे हैं। अगर बच्चा गंदगी से भरा है तो वह उससे नफरत नहीं करते। मन के प्रभाव में मनमुख को बहुत कम समझ होती है, वह गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करता। वह गुरु की खुशी के लिए नहीं जीता, उसे केवल अपनी इच्छा से सरोकार है। इसका कारण यह है कि उसका 'शब्द' से जोड़ बहुत कम है या बिल्कुल ही नहीं है। जब किसी व्यक्ति को जोड़ मिल जाता है तो उसे वह संभाल कर रखना चाहिए तभी बिना किसी प्रयत्न के सदगुण आएंगे। सच्ची नम्रता का कीमती गुण दिल में पैदा होगा, शब्द को सुनना ही सभी गुणों का खजाना है।

कब लग करो कुटीलता गुरु से, अब तो गुरु को लो पहिचान।

सच्चे तथ्यों को छिपाकर आप सोचते हैं कि गुरु को क्या पता है जो हम करना चाहते हैं वह सही है। गुरु हमारे हर एक कर्म को देख रहे हैं क्योंकि गुरु पावर हमारे अंदर है लेकिन हम मूर्खता से सोचते हैं कि वह हमें देखने के लिए मौजूद नहीं है तो हम कुछ भी कर सकते हैं, उन्हें पता नहीं चलेगा। गुरु केवल जिस्मानी स्वरूप नहीं है और न ही वह इंसानी जामा है बल्कि वह उसमें प्रकट सर्वशक्तिमान परमात्मा की ताकत है। सभी इस बात को मानते हैं कि परमात्मा हर जगह हैं और सब कुछ देख रहे हैं। गुरु क्या हैं, यह जानने के लिए पूरी तवज्जो दें फिर उन्हें जानें।

आज से गुरु के प्यारे, लायक शिष्य बनें। आप गुरु के वचनों को मानें। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में। भाईयो, बार–बार संसार में आने का क्या फायदा, अब क्यों नहीं करते? अगर यह जन्म चला गया फिर आपके हाथ नहीं आएगा और यह कीमती जन्म बर्बाद हो गया।

हमें कई बार इंसानी जामा मिला होगा लेकिन मान और अहंकार ने हमें बार–बार मारा है। बार–बार हमारे सभी नेक कार्यों को बर्बाद करके हमें फिर उसी जगह वापिस लाकर खड़ा कर दिया है। पहले भी हमारी बर्बादी हुई है और अब भी हम इसे बर्बाद कर रहे हैं। मन की बात न सुनें गुरु के वचनों को मानें। मन की बात का मानना आपको कभी न खत्म होने वाली विपत्ति देगा, मन ने हमेशा तकलीफों को जन्म दिया है।

आप गुरु के कहे मुताबिक क्रोध को प्यार से धो डालें अगर आप यह बात समझने से इंकार करते हैं तो कुछ भी नहीं किया जा सकता, आपको अपनी गलतियों का भुगतान करते रहना पड़ेगा। अगर गुरु से नामदान प्राप्त करने के बाद गुरु के हुक्मों का पूर्ण रूप से पालन करना जारी रहता है तो सांसारिक जीवन की सभी तकलीफों के साथ सभी पाप हमेशा के लिए धुल जाएंगे।

गुरु संसार में क्यों आते हैं और उनका क्या काम है? गुरु आत्मा को मन–इन्द्रियों से मुक्त करके नाम के साथ जोड़ते हैं, ऐसा करने के लिए वे बहुत कठिनाइयों से गुजरते हैं और बहुत मेहनत करते हैं। सतगुरु के पास जाएं और उनका कहना मानें। गुरु के वचन मजबूती से अपने दिल में बांधकर रखें, एक कान से दाखिल करके दूसरे से बाहर न निकालें।

अगर कोई अपने जीवन में आध्यात्मिक रूप से विकसित है तो वह इस जन्म के बाद भी विकसित रहेगा। अगर वह जीते जी विकसित नहीं है तो मौत के बाद कैसे विकास कर सकता है? मनुष्य जामा हमारे पास एक सुनहरी मौका है, जहाँ हम किसी भी हद तक पूर्णता का विकास कर सकते हैं और इस संसार की वस्तुओं से मुक्त हो सकते हैं।

जब कोई जबरदस्त ढ़ंग से अपने आपको गुरु के प्यार और भक्ति में विकसित कर लेता है और आध्यात्मिकता में इतनी तरक्की कर लेता है तो वह संसारी वस्तुओं से मुक्त हो जाता है। उसे इस धरती के जीवन में वापिस आने की कोई जरूरत नहीं। गुरु पावर सदा उसके साथ है वह गुरु की रहनुमाई में अंतरी मंडलों में आगे बढ़ेगा।

जैसा कहा जाता है अगर नामलेवा वैसा ही करें तो निश्चित ही वे ज्योति और महाआनंद के मंडलों में ऊपर उठेंगे, नूरी व मनभावन गुरु को प्रत्यक्ष मिलेंगे। यह मुश्किल लग सकता है लेकिन करना संभव है और गुरु की दया से हर एक की पहुँच में है। हर वह चीज जो पवित्र है, खूबसूरत है और अच्छी है, उसे प्राप्त करना मुश्किल है लेकिन इनके फल महान है।

पूरे गुरु के हर एक नामलेवा का सच्चे अनंत घर पहुँचना तय है लेकिन जब शिष्य गुरु के वचनों को मानता है तो उसकी गति बढ़ जाती है। गुरु को बातों से नहीं जीता जा सकता लेकिन कर्मों से जीता जाता है अगर हम ईमानदारी से अमल करेंगे तो वे थोड़े समय में ही हमें अपनी तरह सन्त बना देंगे। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा गुफा दर्शनों के समय दिया गया संदेश

गुफा दर्शन

06 दिसम्बर 1984 16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान

हाँ भई, आप सबने इस जगह के बारे में सब कुछ सुना हुआ है कि इसका इतिहास क्या है, यह क्यों बनी, किसने और किसलिए बनवाई? जो व्यक्ति इस जगह श्रद्धा-प्यार और भरोसा लेकर गया था, उसे उसके गुरु ने दुनिया में रोशन किया। सुखमनी साहब में आता है:

आठ पहर जो हरि हरि जपे, हरि का भगत परगट नहीं छिपै।
भगति करे पाताल में परगट होइए आकाश।।

यह भक्ति, गुरु-प्यार और श्रद्धा का चमत्कार है। यह चमत्कार किसी पार्टी, पढ़ाई-लिखाई, ऊंची कुल, धन और गरीबी का नहीं है। मुझे बचपन से खोज थी, मुझमें प्यार और श्रद्धा थी कि प्रभु ने हमें इंसानी जामा दिया है, हमें उस प्रभु को जरूर प्राप्त करना और देखना चाहिए।

मैं कई बार सतसंग में अपने दिल के ख्याल और उभार प्रकट किया करता हूँ कि मैंने भक्ति इसलिए की थी कि परमात्मा से मिलेंगे और शांति से बैठेंगे। मैं परमात्मा से मिलना बहुत जरूरी समझता था लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि जब परमात्मा से मिलते हैं तो वे किसी काम की ज़िम्मेदारी भी दे देते हैं।

यह सच है कि गुरु अंगद देव जी ने कमाई की थी। गुरु नानक देव जी के बच्चे गद्दी के पीछे लड़ते रहे। जब गुरु अंगद देव जी से कहा गया

तो उन्होंने कहा कि गठरी भारी है। मुझे भी अब पता चल रहा है कि गठरी कितनी भारी है। कितने सेवक होते हैं, उनकी कितनी परेशानियां होती हैं। गुरु दयालु पुरुष होते हैं, वे सबकी परेशानियाँ अपने ऊपर ले लेते हैं। उनका अपना कोई कर्म नहीं होता, वे तो कर्मों को नाश–फनाह करते हैं लेकिन उन्हें जो तकलीफ़ें आती हैं, वह उनके सेवकों का ही भार है जिसे वे चुपचाप उठा रहे होते हैं। उनके सेवक ही उन पर बोझ बने होते हैं लेकिन वे इतने दयालु होते हैं कि सेवकों को एहसान तक भी नहीं जताते।

परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''इंसान का बनना मुश्किल है, भगवान का मिलना मुश्किल नहीं है। भगवान तो इंसान की तलाश में होते हैं।'' यह सच है कि जो जंगल में उनकी खोज और याद में बैठा था, उन्होंने खुद ही आकर उसे ढूंढा। परम पिता कृपाल को अजायब ने नहीं ढूंढा बल्कि महाराज कृपाल ने अजायब को आकर ढूंढा।

मैं आशा करता हूँ कि आपने इसमें सिर्फ माथा ही नहीं टेकना बल्कि अपनी श्रद्धा, प्यार और भरोसे से अंदर दाखिल होकर बाहर आना है ताकि आपकी आत्मा की भी जंग और मैल उतरे।

यह जगह आम आदमियों के लिए नहीं है। आमतौर पर यह मकान नहीं खोला जाता बेशक कोई कितना भी प्रेम–प्यार करने वाला क्यों न हो चाहे वह हिन्दुस्तानी है या पश्चिम का प्रेमी है।

परम पिता कृपाल का हुक्म था कि जो यहाँ दस दिन अभ्यास करेगा, उसे ही अंदर जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा। कई मिनिस्टरों ने भी विनती की कि हमें वह जगह दिखाएँ जहां आपने अभ्यास किया था। हम हाथ जोड़कर उनसे माफी माँग लेते हैं कि देखो, महाराज जी का हुक्म था कि जो आदमी अभ्यास करेगा वही देख सकता है अगर आप भी दस दिन अभ्यास करेंगे तो आप भी देख सकेंगे।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से...

लकीर

गुरु अर्जुनदेव जी इस शब्द में बताएंगे मुझे किस तरह साधु गुरु रामदास जी मिले बेशक गुरु अर्जुनदेव जी गुरु रामदास जी के घर ही पैदा हुए थे लेकिन यह अपना–अपना ख्याल है। रेनू और मोतिया जो शब्द पढ़ रही थी, उसमें आपने सुना हैः

देखा तो शायद हर नजर ने देखा, अपने अपने ख्याल से।

जिसने श्रद्धा और प्यार से देखा वह उसी का हो गया। वह कह उठाः

तू मेरा पिता तू है मेरा माता, तू मेरा बंधप तू मेरा भ्राता।
तू मेरा राखा सभनी थाईं तां भौ केहा काडा जीओ।।

अपने आप ही उसकी आत्मा पुकारकर कह देती है, देखने की अपनी–अपनी नजर है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जांकी होय भावना जैसी हरि मूरत देखी तिन तैसी।

अभी साँपला में ग्रुप आया था, वहाँ इस किस्म का एक सवाल आया कि जिस दिन गुरु नामदान देते हैं, शिष्य के अंदर बहुत लगन होती है। धीरे–धीरे शिष्य की लगन कम हो जाती है। क्या गुरु के प्यार में कमी हो जाती है या शिष्य के प्यार में कमी हो जाती है? उसके बाद दूसरा सवाल करने की गुंजाईश नहीं थी, मैंने इसी सवाल पर एक घंटा लगाया। जिनकी प्रीत पहले दिन जैसी लगी होती है अगर सारी जिंदगी उसी तरह निभ जाए तो उसका खुद का तरना क्या मुश्किल है, वह करोड़ों जीवों को भी तार देता है।

जैसी लौ पहले लगी तैसी निभ है ओड।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।।

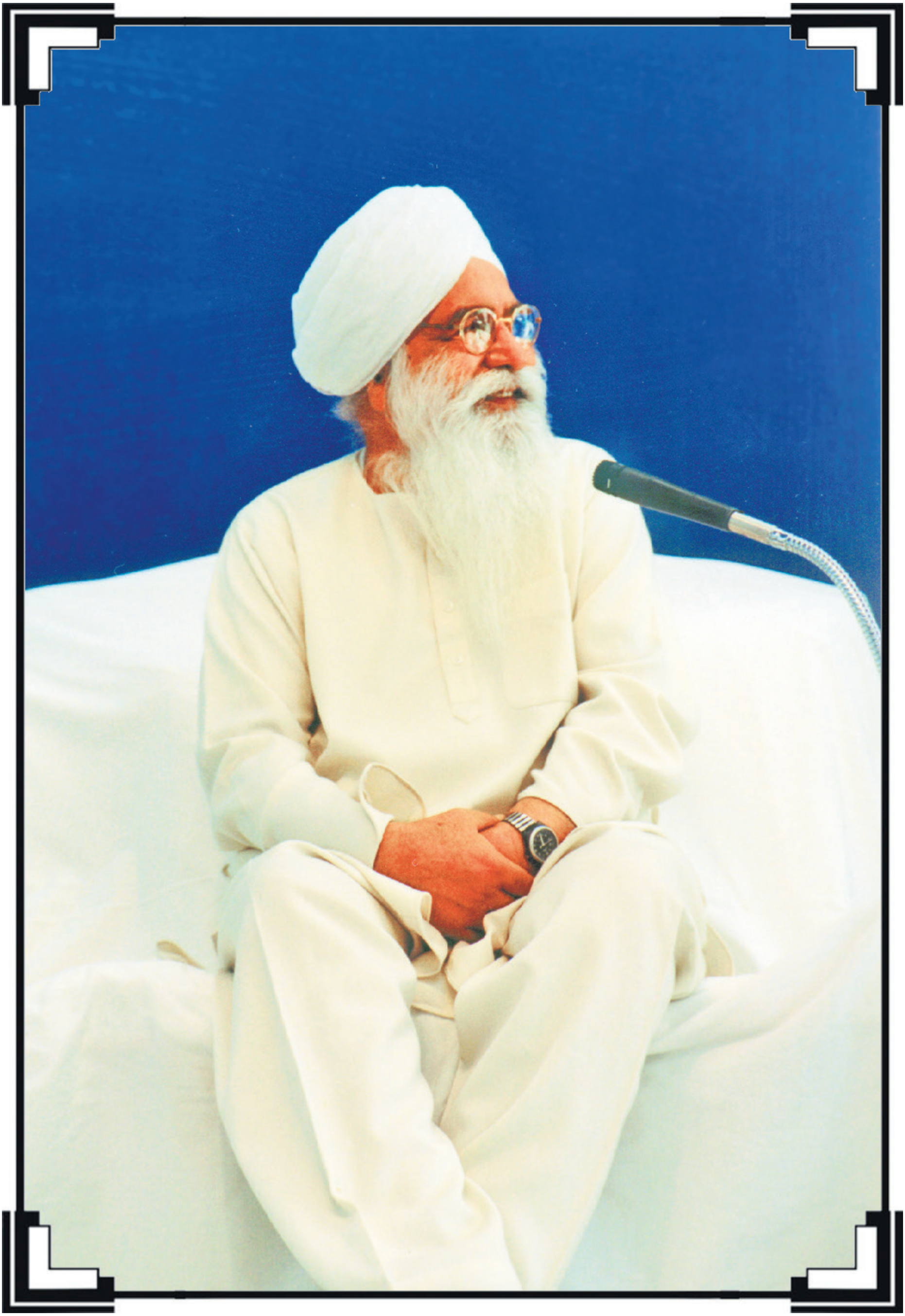

हम बीमार हैं तो डाक्टर के पास जाते हैं, डाक्टर दवाई देता है हमारी बीमारी बताता है और उसके साथ कुछ परहेज भी बताता है अगर आप डाक्टर के कहे मुताबिक परहेज नहीं करेंगे तो ठीक नहीं होंगे। हम बहुत बार अपनी सफाई पेश करते हैं हालाँकि वह ऐब हमने किया होता है। नुकसान तो हमारा ही है कि हमने बदपरहेजी की इसलिए हमारी सेहत ठीक नहीं हुई।

इसी तरह जब हम सन्तों के पास जाते हैं तो वे नामदान दे देते हैं। नामदान देते समय बहुत सारी हिदायतें बताते हैं कि आप इनका उलंघन न करें। सीता ने लकीर पार की तो आगे आप सारे ही जानते हैं कि **लकीर** पार करने से क्या हुआ। सन्त कहते हैं:

जे सीता लकीर ना टपदी ते क्यों रावण ले जांदा।
रास्ता छोड़ कुरस्ते होए ताइंयो धक्के खांदा।।

प्यारेयो, हम गुरु की बताई हुई **लकीर** पार कर जाते हैं इसलिए हमारी यह हालत होती है। सन्त जिस शान्ति का जिक्र करते हैं हमें वह शान्ति प्राप्त नहीं होती। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे:

साधुआं दा बिगाड़ेया न घर जोगरा न घाट जोगरा।

किसी और जगह ऐसा रस नहीं आता। हम बैठने से भी नहीं हटते क्योंकि वैसी चीज किसी और जगह नहीं मिलती। हम सतसंग नहीं छोड़ सकते क्योंकि कहीं ऐसा रस नहीं मिलता। सन्त कहते हैं कि जिस तरह सीता **लकीर** पार करके पछताई थी अगर हम **लकीर** तोड़कर दिल में पछतावा रखें तो प्यारेयो फिर भी उस मालिक को रहम होता है।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में 2025 के सतसंगों के कार्यक्रम

1. 07, 08, 09, 10, 11 व 12 सितम्बर
2. 03, 04 व 05 अक्टूबर
3. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
4. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज